(९) सुरपति ने अपने शीश...

सुरपति ले अपने शीश, जगत के ईश गये गिरिराज;
जा पांडुक शिला विराजा ॥ टेक ॥
शिल्पी कुबेर वहाँ आकर के क्षीरोदधि का जल लाकर के;
रचि पैडि ले आये, सागर का जल ताजा,
फिर न्हवन कियो जिनराजा ॥ 1 ॥
नीलम पन्ना वैडूर्यमणी, कलशा लेकर के देवगणी;
इक सहस आठ कलशा लेकर नभ राजा,
फिर न्हवन कियो जिनराजा ॥ 2 ॥
वसु योजन गहराई वाले, चहुँ योजन चौड़ाई वाले;
इक योजन मुख के कलश ढूरे जिनमाथा,
नहीं जरा डिगे शिशुनाथा ॥ 3 ॥
सौधर्म इन्द्र अरु ईशाना, प्रभु कलश करें धर युग पाना;
अरु सनत्कुमार महेन्द्र, दोय सुरराजा,
शिर चमर ढुरावें साजा ॥ 4 ॥

फिर शेष दिविज जयकार किया, इन्द्राणी प्रभु तन पोंछ लिया;
शुभ तिलक दृगांजन शची कियो शिशुराजा,
नाना भूषण से सजा ॥ 5 ॥

ऐरावत पुनि प्रभु लाकर के माता की गोद बिठा करके;
अति अचरज ताण्डव नृत्य कियो दिविराजा,
स्तुति करके जिनराजा ॥ 6 ॥

चाहत मन मुन्नालाल शरण वसु कर्म जाल दुठ दूर करन;
शुभ आशीषमय वरदान देहु जिनराजा,
मम न्हवन होय गिरिराजा ॥ 7 ॥